सरेन्डर होना अर्थात्
हर श्रेष्ठ कार्य में जिम्मेवार बनना

आज आप सभी पाण्डवों की याद-प्यार लेकर जब मैं वतन में बाबा के सामने पहुँची तो बाबा ने मेरे गले में अपनी बांहों का हार डाल दिया और अपने हृदय का हार बना दिया। देखो, यह मधुर मिलन मन ही जाने। आप सब भी योगबल के द्वारा उड़कर, वतन में पहुँचकर यह अनुभव ज़रूर करना। बोलो, अभी-अभी कर रहे हो या करना है? फिर बापदादा कुछ समय के बाद बोले, कि बच्ची आज बच्चों की याद-प्यार लाई हो! मैंने कहा बाबा आज तो सेवाकेन्द्र पर रहने वाले सरेण्डर सेवाधारी पाण्डवों की याद लाई हूँ। बापदादा मुस्कराये और बोले वाह! इस ग्रुप को नाम तो बहुत अच्छा दिया है, सरेण्डर। तो आज आप इन सब बच्चों से यह पूछना कि सिर्फ अर्पण हैं वा कुछ-कुछ अर्पण हैं वा सर्व अर्पण हैं? तो बोलो, आप सब तीनों में से कौन हो? नम्बरवन हो, टू हो या नम्बर थ्री हो? ज्ञान के दर्पण में अपने स्वरूप को देखा है कि कहाँ तक सरेण्डर हैं? हर संकल्प में, बोल में, कर्म में, बाप की श्रीमत प्रमाण चलना अर्थात् सरेण्डर होना।

फिर बाबा ने कहा - बाप को बच्चों को देख बहुत प्यार आता है कि बच्चों ने हिम्मत बहुत अच्छी रखी है और सेवा अर्थ दिन-प्रतिदिन आगे चल भी रहे हैं लेकिन साथ-साथ बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप की और भी कई जिम्मेवारियां हैं। बोलो, पाण्डवो आपको अपनी और जिम्मेवारियों का पता है? आज बापदादा ने आप सबके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी रखी है, बताओ कौन-सी होगी? तो बापदादा बोले, एक जिम्मेवारी तो यह है जो सदा निमित्त बहनों के साथ-साथ संगठन को और निमित्त बने हुए सेवाकेन्द्र

को रूहानी अव्यक्त वातावरण वाला बनाना है। और दूसरा बाबा ने कहा कि सेवा में सदा हाँ जी, अथक और निर्विघ्न स्थिति में रहकर सेवा को आगे बढ़ाना है। समय, संकल्प और कर्म को सफल करना है और श्रेष्ठ खाते में जमा का खाता बढ़ाना है। बोलो, यह जिम्मेवारी निभा रहे हो ना!

बाबा ने फिर कहा कि ऐसे नहीं समझना कि यह तो बहनों का काम है, लेकिन सरेण्डर होना अर्थात् हर श्रेष्ठ कार्य में जिम्मेवार बनना। बापदादा की इस ग्रुप में भी बहुत-बहुत शुभ आशायें हैं, अवश्य यह ग्रुप स्व-परिवर्तन द्वारा हर सेवा स्थान में ऐसा वायुमण्डल बनायेगा जो आने वालों को आते ही रूहानी वायब्रेशन का अनुभव हो। बोलो, बच्चे ऐसा दृढ़ संकल्प किया है ना? हिम्मते बच्चे मददे बापदादा तो पदमगुणा हर समय मददगार है ही। पाण्डवों का साथी पाण्डव-पति सदा साथ है।

ऐसे कहते हुए फिर बाबा ने कहा कि बच्ची मेरे पाण्डवों के लिए आज क्या सौगात ले जायेंगी? तो मैं मुस्कराई। बाबा ने सेकण्ड में क्या दिखाया! एक सुन्दर थाली में बहुत से कमल के पुष्प थे, जो बहुत विचित्र और सुन्दर थे। हर पत्ता भिन्न-भिन्न लाइट से चमक रहा था। बोलो, वह कितना अच्छा लगता होगा! दिल को बहुत आकर्षित कर रहा था और उन पत्तों में लिखा हुआ था: ८. बापदादा को सदा साथ रखना और ७. सदा साक्षी, न्यारे और प्यारे रहना। यह सौगात तो बहुत सुन्दर थी जो बाबा ने आप सभी के लिए दी।

उसके बाद कुछ समय बाबा ऐसे साइलेन्स में चले गये जैसे बाबा को कुछ याद आ रहा है। तो बापदादा को राखी का त्योहार याद आया और कहा कि दादी तो सबको राखी बांधेगी ही, साथ में बापदादा भी चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को बहुत-बहुत दिल से याद-प्यार भी दे रहे हैं और इस वर्ष के विशेष बन्धन को याद दिला रहे हैं। बाबा ने बोला कि विश्व की सेवा तो करते ही हो लेकिन विशेष अपने आपको भी बन्धन में बांधना है अर्थात् अपनी भी रक्षा करनी है। कौन-सी रक्षा करनी है? हर समय अमृतवेले से

लेकर अपने अनादि, आदि और ब्राह्मण जीवन के रूहानी संस्कारों की रक्षा करनी है अर्थात् अपने प्रैक्टिकल चेहरे और चलन में प्रत्यक्ष दिखाना है और साथ-साथ बाबा ने कहा कि बच्चे बापदादा को गिफ्ट वा खर्ची भी तो देंगे ना! तो बाबा ने बोला कि अपने व्यर्थ नगेटिव संकल्प, भाव और भावनायें जो उत्पन्न होती हैं, उसको बाप को देकर मुक्त होना है। यह गिफ्ट बाबा को देनी है और गिफ्ट दी हुई चीज़ फिर वापस नहीं लेनी है। बच्चे बार-बार सोचते और प्रतिज्ञा भी करते हैं लेकिन बार-बार फिर संस्कार इमर्ज हो जाते हैं, इसका कारण क्या है? तो बाबा ने सुनाया कि बच्चे सूक्ष्म बीज को परखकर बीज को खत्म नहीं करते हैं। जैसे वृक्ष को ऊपर-ऊपर से टाल-टालियां काट लेते हैं लेकिन बीज को खत्म न करने से सीजन आने पर फिर निकल आता है, ऐसे बच्चों के आगे भी समस्याओं रूपी सीजन आने पर फिर-फिर वह फालतू संस्कार इमर्ज हो जाते हैं और बार-बार मिटाने की मेहनत करते हैं इसलिए इस वर्ष इस रक्षा के बन्धन को पक्की-पक्की डबल गांठ बांधनी है। बोलो, सभी बच्चों को यह बन्धन मीठा लगता है ना!

उसके बाद आज बाबा ने अपनी मीठी दादी सहित सब दादियों को और सब मधुबन निवासी भाई-बहनों को बहुत-बहुत स्नेह से याद किया और राखी की मुबारक दी और मीठा मुस्कराते हुए कहा कि दादी की आठ भुजाओं को याद देना। (मधुबन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, पीसपार्क, म्यूजियम, संगम भवन, शान्तिवन और आबू निवासी वा बी.के. कालोनी वाले) जड़ चित्रों में तो अष्ट भुजाधारी दिखाते ही हैं लेकिन दादी तो अभी प्रत्यक्ष आठ भुजाधारी बन कार्य कर रही है, आठ ही स्थानों के सर्व बच्चों को बाबा ने याद दी और कहा कि हर एक बच्चा अपने-अपने नाम वा विशेषता सहित स्पेशल बापदादा का याद-प्यार लेवे और बाबा के लव में लीन हो जाए। ऐसे सबकी याद लेते और देते हुए मैं साकार वतन में आ गई।